International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 846-847

प्रेमचंद की कहानियों में युग–चेतना

डॉ. विजय शंकर मिश्र

हिन्दी विभाग, सत्यवती कॉलेज (सांध्य), नई दिल्ली, दिल्ली, भारत।

प्रस्तावना

मुंशी प्रेमचंद का समय स्वतंत्रता–प्राप्ति के लिए होने वाले संघर्षों का काल था। वह युग एक बड़ी सीमा तक गाँधी–युग था। गाँधी जी का पूरे समाजों के साथ–साथ साहित्यकारों पर भी व्यापक प्रभाव पड़ा। उनका विचार–दर्शन और उसके आधार पर चलने वाले आंदोलन साहित्य को भी प्रेरित कर रहे थे क्योंकि साहित्य समाज का दर्पण[1] और जीवन की समीक्षा[2] है। पृष्ठभूमि के रूप में प्रेमचंद के समक्ष ब्रह्म समाज[3], आर्य समाज[4], प्रार्थना समाज[5], थियोसोफिकल सोसाइटी[6], रामकृष्ण मिथन[7] आदि सुधार आंदोलन थे। एक प्रखर समाजचेता रचनाकार का कर्त्तव्य निभाते हुए कथा–सम्राट ने अपनी कहानियों में 'भी' युग को मूर्तिमंत किया है।

इतिहास की राष्ट्रवादी संदर्भों में प्रेरक–शिक्षक रूप में स्वीकृति

महाकवि जयशंकर 'प्रसाद' के अनुसार इतिहास का अनुशीलन किसी भी जाति को अपना आदर्श संगठित करने में सहायता प्रदान करता है।[8] मुंशी प्रेमचंद की कहानियों में यह लक्ष्य अतीव प्रशस्य रूप में उभरा है। 'रानी सारंधा' में इतिहास को राष्ट्रवादी कलेवर प्रदान करते हुए वरेण्य मूल्यों एवं आदर्शों की प्रतिष्ठा का प्रयत्न है। 'परीक्षा' में नादिरशाह के माध्यम से नारी को भोगी–विलासी मानसिकता से ऊपर उठ कर प्रेरणा बनने को कहा गया। 'शतरंज के खिलाड़ी' में परिवेश एवं वातावरण के महान् वर्णनों एवं घटनाओं के द्वारा जनमानस को राजनीतिक भावों का उत्कर्ष करने का परामर्श दिया गया।

किसी भी जीवंत राष्ट्र में राष्ट्रवादी चेतना की उपस्थिति अनिवार्य है। 'शतरंज के खिलाड़ी' में इस चेतना की भयावह अनुपस्थिति का अतीव प्रभावी चित्रण हुआ है। प्रेमचंद के अनुसार इसी से पराधीनता आती है।

राष्ट्रीय आंदोलन एवं गाँधी का प्रभाव

प्रेमचंद का समय गाँधी–युग के रूप में जाना जाता है। गाँधी जी और उनके संकेतों पर चलने वाली संस्था काँग्रेस के भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के प्रतीक होने की सूचना उनकी कहानियों में अनायास ही प्राप्त होती है। 'मैकू' कहानी में आंदोलनकारियों का अहिंसावाद उभरा है। मैकू का हृदयपरिवर्तन गाँधीवाद का परिणाम है– तमाचे का निशान मेरे कलेजे पर है, मैं कमीना नामर्द नहीं हूँ। वह ताड़ीखाने का विध्वंस करता है।[9] 'होली का उपहार' में स्वदेशी का समर्थन है। सुखदा अपने पति अमरकांत द्वारा लाई गई विदेशी साड़ी पर देश खद्दर को वरीयता प्रदान करती है। अमरकांत का हृदयपरिवर्तन होता है और वह स्वदेशी के समर्थन में गिरफ़्तारी देता है।[10] गिरफ़्तारी सत्याग्रह की रणनीति है। 'सत्याग्रह' में काँग्रेस भारत की आंदोलनकारी चेतना की प्रतीक बतलाई गई है।[11] गाँधी जी काँग्रेस के सदस्य नहीं थे, लेकिन व्यावहारिक अर्थों में काँग्रेस का अर्थ गाँधी ही था। हड़ताल की सूचना का व्यापक असर गाँधी जी के प्रभाव का ही परिणाम है। पूरे आंदोलन का चरित्र गाँधीवादी है। दूकानदारों का कहना है कि काँग्रेसी धरना देंगें, उपवास करेंगे, कुँए में गिरेंगे, एकाध जान भी दे सकता है। यह गाँधी जी के व्यक्तित्व का प्रभाव था। आंदोलन के ऐसे स्वरूपों, नशाबंदी तथा स्वदेशी के सामाजिक–सांस्कृतिक–आर्थिक अर्थ आज भी उतने ही संदर्भवान् हैं।

गोरी नस्लवादी शासकीय मानसिकताएँ एवं दण्डवादी व्यवस्था

पराधीन भारत में अंग्रेज़ों की नस्लवादी मानसिकता एक ऐतिहासिक सत्य है। गोरी नस्ल उनके लिए महानतम् थी। गोरा आदमी–औरत उनके लिए सर्वाधिक मूल्यवान था– चाहे वह गलत ही क्यों न हो। 'फातिहा'[12] में अंग्रेजों का सिपाही हिम्मतसिंह अफ्रीदियों द्वारा बंदी बनाया जाता है। उसने अपहरणकर्त्ताओं के समक्ष प्रस्ताव रखा कि मेरी हत्या से कुछ लाभ नहीं होगा। इसके बदले सरकार से पाँच सौ रुपए लेने में तुम्हें लाभ होगा। अफ्रीदी दो हज़ार रुपए चाहते हैं। हिम्मत सिंह स्पष्ट कहता है कि गोरी सरकार काले आदमी का जीवन बचाने पर इतना बड़ा खर्चा नहीं करेगी। यह नस्लवाद उस समय का कटु यथार्थ था, जिसे प्रेमचंद ने वाणी प्रदान की। आज भी अमेरिका तथा यूरोप में गोरी नस्ल समस्त समतावादी लोकतांत्रिक मूल्यों की भरपूर वकालत करते हुए भी शेष नस्लों को अपने से हीन मानती है। रंग–भेद एक वास्तविकता है।

'मैकू' में नशाबंदी के विरुद्ध हो रहे जन–आंदोलन के दमन हेतु पुलिस अर्थात् शासन–व्यवस्था और गुण्डों की एकजुटता के यथार्थवादी वर्णन हुए हैं। ऐसे प्रकरण शासन–तंत्र के आपराधिक चरित्र को उद्घटित करते हैं।[13]

शासन का भ्रष्ट स्वरूप एवं तदनुसार सामान्य सामाजिक स्वभाव

'नमक का दारोगा'[14] कहानी में शासन–व्यवस्था के भ्रष्ट स्वरूप तथा इस तथ्य से परिचित सामान्य सामाजिक स्वभाव की बहुत सटीक सूचना प्राप्त होती है। अलोपीदीन का न्यायालय एवं सत्ताधीशों पर भारी प्रभाव उनको तस्करी के आरोपों से मुक्त करवा देता है। ईमानदार नमक के दारोगा वंशीधर मुअत्तल हो जाते हैं। भ्रष्ट शासन में मूल्यधर्मिता पूर्ण पराजित होती है। सामान्य जनता इससे प्रसन्न होती है। लेकिन उसे आश्चर्य है कि इतना प्रभावशाली व्यक्ति पकड़ा कैसे गया। यह आश्चर्य उस युग की व्यवस्था और मानसिकता की मार्मिक अभिव्यक्ति है। यह व्यवस्था निबद्ध विडंबना की विवृति है। स्वयं वंशीधर के माता–पिता उनकी ईमानदारी और कर्त्तव्यनिष्ठता से क्षुब्ध थे। सामान्य स्वभाव ऐसी नौकरी पर लुब्ध होता है, जिसमें ऊपरी आमदनी अर्थात् रिश्वत की संभावनाएँ अधिक–से–अधिक हों। यह जितना उस समय का सत्य था, उतना ही आज के समय का भी सत्य है। स्थितियाँ बदली नहीं हैं। वंशीधर के नमक का दारोगा बनने पर

पड़ोसियों के ईर्ष्याप्रदग्ध होने और महाजनों के 'नरम' पड़ने का उल्लेख करके प्रेमचंद ने युगीन मानसिकता को प्रकाशित किया है।

'घमण्ड का पुतला'[15] में मिस्टर वागले कनिष्ठ सरकारी कर्मचारियों की चापलूसी और आवभगत करने वाले ज़मींदारों पर कृपा बरसाने की स्थितियों की स्पष्ट सूचना देते हैं। 'दो बहनें' [16] कहानी में भी तत्कालीन सामाजिक एवं शासन–व्यवस्थापरक मानसिकताओं का सुंदर परिचय प्राप्त होता है।

पुलिस–तंत्र की शक्ति एवं चरित्र

भारतीय सत्ता–व्यवस्था में पुलिस–तंत्र का प्रभाव आवश्यकता से बहुत ही अधिक है। इसके अनेकानेक कारण है। प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में इस तथ्य को पूरे कौशल के साथ अत्यंत स्वाभाविक रूप में चित्रित किया है। 'शंखनाद' [17] कहानी में भानु चौधरी को दरोगा बैठने के लिए टाट देता है, जिसे चौधरी गौरव मानता है। इस कहानी में पुलिस और मुखिया के मेलजोल एवं गठजोड़ से उत्पन्न विपरीत स्थितियों का परिचय प्राप्त होता है। 'मैकू' [18] में कादिर व्यापक पुलिसीय सत्य को प्रकाशित करता है– पुलिस जहाँ चार पैसे हों, वहीं बोलती है। यह पुलिस का भ्रष्ट चरित्र है। 'सद्गति' [19] में गोंड पुलिस की तहकीकात की संभावना मात्र से आतंकित है। इस आतंक के कारण दुःखी चमार के शव को कोई हाथ तक नहीं लगाता। 'रामलीला' [20] कहानी में पिता पुलिस अधिकारी होने के कारण बिना चढ़ावा दिए आरती लेने के भी सहज अधिकारी बन जाते हैं। पुत्र द्वारा चढ़ावा में एक रुपया देने से पिता के 'रोब पर बट्टा' लगता है। ये समस्त संकेत एवं सूचनाएँ समाज में पुलिस–तंत्र की शक्ति और चरित्र को उजागर करती हैं।

इसमें कोई संदेह नहीं कि कथा–सम्राट मुंशी प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में सामाजिक चेतना को अपूर्व कौशल के साथ अभिव्यक्त किया है। उन्होंने नारी, जाति, धर्म, शोषण आदि–आदि का बेहद प्रभावी वर्णन–चित्रण किया है। उनकी रचनाएँ युग का प्रतिबिम्ब प्रतीत होती हैं। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने प्रेमचंद को उत्तर भारत की समस्त जनता का सर्वोत्तम परिचायक बहुत ठीक माना है। [21]

संदर्भ

1. प्रसिद्ध साहित्यिक उक्ति
2. 'लिटरेचर इज़ द क्रिटीसिज़्म ऑफ लाइफ' उक्ति का अनुवाद
3. राजा राम मोहन राय से संबंधित संस्था
4. महर्षि दयानंद से संबंधित संस्था
5. केशवचंद्र सेन से संबंधित संस्था
6. एनी बेसेंट से संबंधित संस्था
7. रामकृष्ण परमहंस से संबंधित संस्था
8. जनमेजय का नागयज्ञ, जयशंकर प्रसाद
9. मैकू, प्रेमचंद
10. होली का उपहार, प्रेमचंद
11. सत्याग्रह, प्रेमचंद
12. फातिहा, प्रेमचंद
13. मैकू, प्रेमचंद
14. नमक का दरोगा, प्रेमचंद
15. घमण्ड का पुतला, प्रेमचंद
16. दों बहनें, प्रेमचंद
17. शंखनाद, प्रेमचंद
18. मैकू, प्रेमचंद
19. सद्गति, प्रेमचंद
20. रामलीला, प्रेमचंद
21. हिन्दी साहित्य, हजारी प्रसाद द्विवेदी